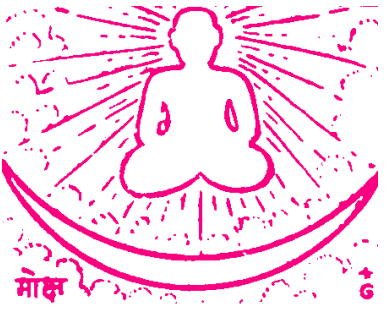

(E - 103)

ध्यानहुताशनमें अरिईंधन

(राग-सवैया)

ध्यानहुताशनमें अरिईंधन, झोंक दियो रिपु रोक निवारी,
शोक हर्यो भविलोकनको वर, केवलज्ञान मयूख उघारी।
लोकअलोक विलोक भये शिव, जन्मजरामृत पंक पखारी,
सिद्धन थोक बसै शिवलोक, तिन्हैं पग धोक त्रिकाल हमारी।
तीरथनाथ प्रनाम करैं तिनके गुणवर्णनमें बुधि हारी,
मोम गयो गलि मूसमझार रह्यौ तहं व्योम तदाकृति धारी।
लोक गहीर नदीपति नीर गये तरि तीर भये अविकार,
सिद्धन थोक बसें शिवलोक तिन्हैं पगधोक त्रिकाल हमारी।

(दोहा)

अविचल ज्ञान-प्रकाशतैं, गुण अनंतकी खान,
ध्यान धरै सो पाईये, परमसिद्ध भगवान।

अविनाशी आनंदमय, गुण पूरण भगवान,
शक्ति हिये परमातमा, सकल पदारथ ज्ञान।
चारों करम विनाशिके, ऊपज्यो केवलज्ञान,
इन्द्र आय स्तुति करी, पहुंचे शिवपुर थान।